राज
कॉमिक्स
मूल्य 8.0
378
तिलिस्म का
खिलाड़ी
अश्वराज
इस कॉमिक्स के
साथ अश्वराज
का एक स्टीकर
मुफ्त

1559

तिलिस्म का खिलाड़ी

लेखिका :- मीनू वाही
पटकथा :- तरुण कुमार वाही
चित्रांकन :- चंदू
सम्पादन :- मनीष गुप्ता
कलानिर्देशन :- प्रताप मुळीक

प्रस्तुत कॉमिक्स का सम्पूर्ण आनन्द प्राप्त करने के लिए 'अश्वराज सीरीज' के निम्न धधकते हुए कॉमिक्स अवश्य पढ़ें!

1 अश्वराज 2 कारू का खजाना 3 अश्वमणि

© RAJA POCKET BOOKS

पराजित को अपराजित की बात माननी होगी। बचो अश्वराज! ये चला कन्यास्त्र!
कन्या से युध्द?
धर्म संकट में पड़ गया था अश्वराज!
कन्यास्त्र का वार बेकार गया, पर कन्यास्त्र नहीं।
ये कन्यास्त्र तब तक लौटकर मेरे पास आता रहेगा, जब तक इसका वार चल नहीं जाता।
बचो अश्वराज! लेकिन घबराना नहीं। इसकी चोट तुम्हें केवल मूर्छित करेगी।
कन्या पर वार नहीं कर पाऊंगा मैं।
कन्या बेहद आक्रामक हो चली थी—
वार करो अश्वराज! वरना तुम मुझसे पराजित हो जाओगे।
क्या सचमुच मैं इससे पराजित हो जाऊंगा?
अश्वराज को अपनी पूरी ताकत लगानी पड़ रही थी कन्यास्त्र के वारों से बचने के लिए—
PUFFF

अश्वराज की विवशता का भरपूर लाभ उठा रही थी कन्या—
तड़ाक
आह
शैतान तूताखूता और दादूबोरा सांस रोके इस संघर्ष को देख रहे थे—
महान तूताखूता! ये कन्या छा जायेगी अश्वराज पर।
उफ! अश्वराज एक कन्या पर वार न करने के लिए संकल्प बद्ध लग रहा है।
उसकी ये मूर्खता उसे भारी पड़ सकती है तूताखूता!
बहुत! जल्दी ही कुछ करना चाहिए अश्वराज को।
लेकिन! विलक्षण केवल अश्वराज ही नहीं था विलक्षण थे उसके घोड़े भी—
हिनन हिनन
नीलकंठ क्या कह रहा है?
सभी समझ रहे थे स्थिति की गम्भीरता को—
तुम ठीक कह रहे हो नीलकंठ! अश्वराज कन्या पर हाथ नहीं उठा सकता, किन्तु...!
हम पांचों के सम्मुख ऐसी कोई विवशता नहीं है!

हिन हिन
धड़ाक
ओह! यह क्या?
श्वेतशक्ति ने भी जड़ी ठोकर —
हमसे न जीत पायेगी तू कन्या!
रक्ताम्बर की शक्तिशाली टक्कर ने उछाल फेंका कन्या को —
हिन हिन
नीलकंठ और काला सवार ने ये क्या चाल चली —
नीलकंठ ने उछाल फेंका कन्या को —
हिन हिन
शाबास नीलकंठ!
अश्वराज एक बहुत बड़े संकट से बाहर निकल चुका था —
आओ अश्वराज! मंजिल दूर नहीं!
तुम जैसे साथी हों तो मंजिल सचमुच दूर नहीं है अश्ववट!

महर्षि फुकमसान चमत्कृत थे वह अद्‌भुत संघर्ष देखकर —
अश्वराज के घोड़ों ने कन्या को मात दे दी ! उफ!
रक्ताम्बर, कालखोर, अश्वचट, नीलकंठ और श्वेतशक्ति पांच हाथ हैं अश्वराज के महर्षि!
मैं अपने अंतिम शिष्य तक अपना ये प्रयास जारी रखूंगा राजन और मेरे इस प्रयास की अगली कड़ी है तुला!
राजन! जब तक तुला अश्वराज के सम्मुख पहुंचकर उसे रोकने की चेष्टा करे, मैं आपको बताता हूं ●●●
●●●● कि अश्वराज कालखजूरा, चांडाल, पंजाल, भोकस्य और चोषक की उस भयानक टक्कर के बाद क्या हुआ अश्वकीर्ति का? क्या हुआ अंजाम अश्वांतक और तारपीड़ो के भयानक संघर्ष का? क्या हुआ अश्वमणि का?।

कालखजूरा, चांडाल, पंजाल, भीकम्प और चोषक पांचों शैतानों से घिर गया था अश्वराज!
हा हा हा अश्वराज! क्या कहा था मैंने! ये बाजी जीत ना सकोगे तुम!
अश्वपट का स्वर गूंज उठा अश्वराज के कानों में—
अश्वराज! खतरा पल प्रतिपल आगे बढ़ रहा है!
जबड़े क्रोध से भिंच गये अश्वराज के। हिंसक हो उठा उसका स्वर!
अश्वराज तुम्हारी इन सब बाधाओं को पार कर जायेगा अश्वकीर्ति!
देखना चाहती हो?

देखो!
अपने प्रचण्ड शक्तिशाली रूप में परिवर्तित हो गया अश्वराज—
महाबली, इच्छाधारी अश्वराज!
मेरे इस रूप के आगे बड़े-बड़े तूफान भी मामूली झोंके बनकर रह जाते हैं।

अश्वराज पर सबसे पहला वार तुमने किया था न कालखजूरा!
चांडाल! तुझे मेरा मांस नोंच खाने का शौक था न!
आह
पंजाख! तेरी अंगुलियां न रहें तो?
आह:
भीकम्प! अब देख! जिस्म मेरा खून उगलता है या तेरा?
उफ़!
चोषक! तेरे ये दो दांत ही हैं न तेरी शक्ति का स्त्रोत!
आह

पांचों शैतानों के लिए मौत बन गया अश्वराज!
तुम पांचों एक साथ ही आओ! तुमसे अलग-अलग लड़ने में अश्वराज की बहुत सी उर्जा व्यर्थ ही चली जायेगी!
गाजर-मूली की तरह कटती चली गईं तिलिस्म के शैतानों की गर्दनें—
खच्च खच्चाक
भौचक्की सी खड़ी रह गई थी अश्वकीर्ती, अश्वराज का वह कालरूप देखकर—
नहीं!
तिलिस्म के इस खेल का कोई और खिलाड़ी बचा हो तो उसे भी भेज दो अश्वकीर्ती!
इसी पल अश्वपट का स्वर पुनः गूंज उठा—
अश्वराज! खतरा सिर पर है! सामने ही देख रहा हूं मैं अश्वांतक की फौजों को!

अश्वकीर्ति! याद रख इस तिलिस्म से तुझे मैं निकाल सकता हूं या फिर मौत।
की सेनाएं तेजी के साथ बढ़ रही थीं—
घेर लो कारू घाटी को।
सूर्यवंशी तारपीढ़ी की फौजें भी तेजी के साथ कारू की घाटी की ओर बढ़ रही थीं—
और इधर अश्वराज की आंखों में उतरा हुआ था खून—
मेरे लौटने तक तुझे-यहां रहना होगा अश्वकीर्ति।
फिर पागलों की तरह हंसती चली गई अश्वकीर्ति—
मेरे पिताश्री की फौजों का मुकाबला नहीं कर सकेगा तू अश्वराज!
तेरी मृत्यु के बाद अश्वलोक का शैतान तुताबुता तेरे इस तिलिस्म को तोड़कर मुझे स्वतंत्र कर लेगा हा हा हा।
कारू के खजाने के तिलिस्म से बाहर निकलने से पूर्व अश्वराज अपने वास्तविक रूप में आ चुका था।

इतनी विशाल फौजों का मुकाबला न कर सकोगे तुम !
मत भूलो कि चन्द्रवंशी सम्राट अश्वांतक के पास तिलिस्म का खिलाड़ी है...
तिलिस्म का खिलाड़ी उर्फ बुताबुता !
उससे भी तो मिलना है मुझे।
और आ पहुंचा अश्वांतक अपनी विशाल सेना के साथ—
अश्वराज ! अच्छा हुआ जो तू भी यहां मिल गया। कारूं के खजाने के साथ ही अब तेरी गर्दन भी उतार ले जाऊंगा। हा हा हा।
अश्वराज के चेहरे पर भूचाल था—
अश्वांतक ! अगर मुझे कुछ हो गया तो तेरी बेटी, जो इस तिलिस्म में कैद है, कभी बाहर की दुनिया न देख सकेगी।

अश्वांतक के चेहरे पर भी क्रूरता उभर आई —
हा हा हा! तिलिस्म का खिलाड़ी तोड़ देगा इस तिलिस्म को। अपनी बेटी के साथ कारू का विशाल खजाना भी ले जाऊंगा मैं अश्वराज!
भूल है ये तेरी अश्वांतक! कारू के खजाने का तिलिस्म तोड़कर तेरी बेटी को सिर्फ मैं निकाल सकता हूं।...
...या फिर निकाल सकती है मौत!
इसके टुकड़े-टुकड़े करके मेरे कदमों पर डाल दो।
अश्वराज तक नहीं पहुंच पाए वे सैनिक —
खबरदार! जिसे अपनी जान प्यारी न हो, वही आगे बढ़े!

और इधर अश्वराज पुनः परिवर्तित हो गया प्रचण्ड शक्तिशाली अश्वरूप में—
चीख पड़ा अश्वांतक—
सब मिलकर मार डालो इन्हें।
विद्युत की तरह चमकी अश्वराज की तलवार—
खचाक
प्रलय मचा देना चाहते थे अश्वराज के वे पांच हाथ भी—
धड़ाक
धड़ाक
सैकड़ों-हजारों सैनिकों की विशाल सेना से घिरे थे केवल छः जांबाज।
तुम में से एक भी जीवित न बचेगा।

टिड्डी-दल की तरह पूरी की पूरी सेना ही आगे बढ़ गई उन छ: महारथियों के प्राण हरने को–
देखना ये है कि अश्वराज का सिर कितनी देर में मिलता है मुझे। हा हा हा।
मार डालो। मार डालो।
अश्वराज का सिर लाने को तेरी ये सेना भी तुझे कम पड़ेगी अश्वांतक!
अश्वराज का सिर!
अश्वराज का सिर!

कारू की घाटी बदल गई रणभूमि में। गूंज उठी अश्वांतक के सैनिकों की चीखें —
कारू की घाटी की मिट्टी आज लहू से नहायेगी।
प्रचण्ड वेग से दौड़ लगाता रथ जिधर से गुजर जाता, खलबली मच जाती —
हिन हिन
बचो!
भीषण मारकाट और तबाही मचा दी अश्वराज के पांच सैनिकों ने —
धाऽऽऽ
और अश्वराज पर भी था खून सवार —
और अपने शानदार महल में जादुई दर्पण के आगे बैठे तूताबूता के होंठों पर थी एक भयानक अर्थपूर्ण मुस्कान —
तो आखिर जंग शुरू हो गई।
अश्वकीर्ती को सम्मोहित करके उसे अश्वराज के विरुद्ध करने की चाल ही नहीं सफल हुई मेरी, बल्कि अश्वांतक को अश्वराज से टकरा देने में भी सफल हुआ हूं मैं।

सूर्यवंशी सम्राट तारपीड़ो के गुप्तचर जो कि दरअसल मेरे गुप्तचर हैं, उन्होंने वो खबर सम्राट तारपीड़ो को दे दी होगी, जिसे सुनने के बाद वह भी आता ही होगा। अपनी सेना लेकर कारू की घाटी में युद्ध का बिगुल बजाने।
इस खूनी जंग का मुख्य खिलाड़ी मैं हूं जो अब तिलिस्म का ऐसा खेल खेलेगा कि प्रलय मच जायेगी।
उस प्रलय में अंत हो जायेगा अश्वराज का, चन्द्रवंशी अश्वांतक का, सूर्यवंशी तारपीड़ो का।
हा हा हा। तारपीड़ो और अश्वांतक की मौत से मिलेगा मुझे चन्द्रवंशी और सूर्यवंशी का राजसिंहासन और अश्वराज की मौत से मुझे मिलेगा कारू का खजाना और अश्वकीर्ती।
आ हा हा हा! सम्पूर्ण अश्वलोक का राजा बनेगा महान् लुताबूता!
तिलिस्म का खिलाड़ी कितना भयानक खेल-खेल रहा था सबके साथ—
शाबास अश्वराज! शाबास अश्वांतक! अब देखना ये है कि कौन किसे, कब और कैसे मारता है?
हा... हा... हा...

इतना सब बताने के बाद एक बार फिर चुप हो गए महर्षि फ़ूकमसान।
राजन्! मुझे अफसोस है कि इस खौफनाक जंग का आंखों देखा हाल तुम अब कुछ देर बाद ही सुन पाओगे....
तुला से अश्वराज की जंग के बाद!
एक गहरी सांस के साथ ही राजा चिंतित सिंह की चिन्ता और बढ़ गई —
महर्षि! अश्वराज कारूं के खजाने तक पहुंचे या न पहुंचे, मेरी हार तो दोनों तरफ है। दोनों ही सूरतों में मुझे अपनी बेटी कुदुमछुम्बी के बिछोह का सामना करना पड़ सकता है।
'कुदुमछुम्बी' के जन्म के समय हुई वह भविष्यवाणी आज भी मुझे नहीं भूलती —
राजन्! जिस दिन कोई कारूं के खजाने का तिलिस्म खोलेगा, उसी दिन तुम्हें अपनी पुत्री का बिछोह सहन करना पड़ेगा।
निराश मत हो राजन्! हम सब किस्मत के हाथों की कठपुतलियां हैं! वह जैसा नचाएगी, हमें नाचना होगा।

उधर तुला ने एक विचित्र हरकत कर दी–
उफ! यह जाल कहां से आ गिरा?
यह जाल मैंने गिराया है अश्वराज! तुम्हें फंसाने के लिए। तुम मुझे तुला कह सकते हो।
तुला!
लौट जाओ तुला! इस जाल के भ्रम में मत रहो। ये जाल मुझे तब तक बन्दी बनाए रख सकता है, जब तक मैं इससे निकलना न चाहूं।
देखना ही चाहते हो तो देखो।
इच्छाधारी का एक और विस्मयकारी रूप–
फट

वृक्ष की डाल पर खड़ा पीड़ा से चीत्कार कर उठा तुला —
आह! ये जाल मेरे ही शरीर का अंग है। उफ!
तुला ने फौरन ही जाल समेट लिया —
क्यों तुला? जाल समेट क्यों लिया? मुझे बन्दी बनाकर महर्षि के पास नहीं ले जाओगे?
तुला वृक्ष से नीचे कूद पड़ा —
जरूर ले जाऊंगा अश्वराज!
बड़ा अजीब बन्धन था तुला का —
ओह!
अश्वराज! अपने लचकदार शरीर से तुम्हें बांधकर मैं तुम्हारा मस्तिष्क कुछ देर के लिए सुन्न कर दूंगा।
अश्वराज को परेशान किया तुला ने —
अगर मैंने अपना शरीर फुलाकर इस बन्धन से निकलने की चेष्टा की तो तुला का शरीर टुकड़े-टुकड़े होकर बिखर जायेगा।
लेकिन वह परेशानी क्षणिक थी —
अपने जिस्म को बबूल का पेड़ बना दूं तो?
आSSSSS

पल भर में लहूलुहान होकर गिर पड़ा तुला—
जाओ तुला! वापस लौट जाओ।
अश्वराज बढ़ चला अपने सफर पर आगे—
अश्वराज! कारू की घाटी अब दूर नहीं! अब तुम्हारा सामना घाटी के खतरों से भी हो सकता है।
मैं प्रत्येक खतरों का सामना करने के लिए तैयार हूं अश्ववट!
इधर महर्षि एकाएक और अधिक गम्भीर हो उठे—
अश्वराज कारू की घाटी के निकट पहुंच चुका है राजन! इस बार मुझे दो तरफा आक्रमण करना होगा। उसे रोकने के लिए।
तो क्या इस बार?
हां राजन! इस बार वृश्चिक और धनु अश्वराज को रोकने एक साथ जायेंगे।
और जब तक बिच्छूराज वृश्चिक और धनु अश्वराज तक पहुंचें, मैं आपको उस युद्ध का आगे का हाल बताता हूं।

अश्वराज अकेला ही सैकड़ों पर भारी पड़ गया—
ट्नाक
ट्नाक
मार डालो अश्वराज को!
ट्नाक
ट्नाक
खून के फौव्वारे छुड़ा दिये अश्वराज ने—
और तभी—
आह्
खचाक
उफ!
उफ
आह
अश्वराज! अब मैं और अधिक प्रतीक्षा नहीं कर सकता! कारूं का खजाना और अपनी पुत्री को देखने को आंखें तरसी जा रही हैं मेरी!
और ऐसा केवल तुम्हारी मृत्यु के पश्चात ही हो सकता है!

चीते की तरह उछल गया अश्वराज।
तेरी आंखें अब हमेशा तरसती रहेंगी अश्वांतक!
खचाक
आह्ह्
अश्वराज! मैंने अपनी एक चाल और चल दी है। बच सके तो बच!
तिलिस्म के खिलाड़ी तूताबूता की जादुई डिबिया खुली हुई थी उसके हाथ में।
कैसी चाल चली थी कम्बख्त ने?
?
अश्वराज अभी तक भी नहीं समझ पाया था उस शैतान की चाल को—
पिन
पिन
पिन
पिन
और जब तक संभला, तब तक बहुत देर हो चुकी थी—
उफ! यह क्या? शैतान बौनों की फौज!

अंगूठा बराबर बौनों की उस विशाल सेना ने सम्भलने तक का अवसर न दिया अश्वराज को—
आ हा हा हा! अश्वराज! शैतान बौनों की सेना ने तुम्हारे रक्त में विष की नदी बहा दी है अपने सूक्ष्म भालों से।
अश्वांतक ने लगाया विजयी अट्ट हास—
असहनीय पीड़ा से छटपटा उठा अश्वराज—
अश्वांतक! धोखेबाज! कायर! ये वार छिप कर किया है तूने।
युद्ध का उद्देश्य लड़ाई जीतना होता है अश्वराज! अब लड़ाई चाहे जैसे भी जीती जाए।
तू बहुत पछतायेगा अश्वांतक! मेरी मौत तुझे खून के आंसू रुलायेगी दुष्ट!
बौनों की सेना गायब होने लगी।
छलनी कर दो अश्वराज को।
सैकड़ों भाले बरस पड़े अश्वराज के शरीर पर—
तिलिस्म का खिलाड़ी कहीं बैठा मुस्कराया था।

रक्ताम्बर! कालास्वोर! अश्ववट! नीलकंठ और श्रव्यशक्ति! सांप सूंघ गया था जैसे उन पांचों को –
अश्वराज!
अश्ववट की चीख से थर्रा उठा आसमान भी।
रथ लेकर दौड़ पड़े वे अश्वराज की ओर –
अश्वराज! नहीं अश्वराज! तुम्हें कुछ नहीं हो सकता। तुम्हें कुछ नहीं होगा अश्वराज!
लेकिन अश्वराज अब खामोश हो चुका था –
पांचों के आंसू पोंछने वाला वहां कोई न था।
तूफान अपनी राह बनाता हुआ निकल गया –
अश्वराज! तुम्हें दुश्मनों के हाथ नहीं लगने देंगे।
उफ
क्यों?
आह!

पीछा करो। मुझे वे घोड़े चाहिए। वह भी जीवित।
ठीक तभी उत्तर की ओर से एक भीषण सैलाब उठा —
ओह लगता है सूर्यवंशी सम्राट तारपीड़ो अपनी विशाल सेना के साथ इधर ही बढ़ा चला आ रहा है।
सेनापति भूलपड़ा! सूर्यवंशियों के छक्के छुड़ा दो।
हम तूताबूता की मदद से कारूं के खजाने का तिलिस्म तोड़ने जा रहे हैं।
मुझे मानसिक शक्ति के बल पर तूताबूता से सम्पर्क स्थापित कर उसे यहां बुलाना होगा।

उधर सेनापति भूखण्डा की सेना आगे बढ़ी—
मारो! मारो!
दूसरी ओर से बढ़ी तारपीड़ो की सेना—
खत्म कर दो अश्वांतक को आगे बढ़ो!
भयंकर जंग छिड़ गई—
सेनापति भूखण्डा ने मार-काट मचा दी—
हर कोई अपने दुश्मन के खून का प्यासा बन रहा था—

सम्राट तारपीड़ो बिजली की तरह तलवार चलाते हुए आगे बढ़ रहे थे—
फिर। शीघ्र ही सामना हुआ सेनापति भूखण्डा और सम्राट तारपीड़ो का—
सेनापति भूखण्डा! मेरा पुत्र अश्वराज कहां है?
क्या मतलब?
उसे ढूंढने के लिए तुम्हें भी वहीं भेजना पड़ेगा सम्राट!
बाज की तरह झपट पड़ा भूखण्डा—
मतलब तुम्हें समझायेगा मेरा ये शस्त्र!
शांय
तब अचानक भय से सिहर उठा भूखण्डा—
अश्वमणि! उफ!
चेहरा हल्दी की तरह पीला पड़ गया था उसका—
अश्वमणि देखकर होश क्यों उड़ गये भूखण्डा? बता, कहां है अश्वराज?
अ... अश्वराज मारा जा चुका है सम्राट!
बिजली भी गिर पड़ी तारपीड़ो पर—
ये सच है। अ...अश्वराज हमारे सम्राट के हाथों मारा जा चुका है।
नहीं! झूठ मत बोल शैतान! सच बोल, सच!

और सम्राट इस समय महान तूताबूता की मदद से कारू के खजाने का तिलिस्म तोड़कर अपनी पुत्री अश्वकीर्ती और खजाने को निकालने गए हैं।
दुख व उत्तेजना से रौंगटे खड़े हो गए तारपीड़ो के। क्रोध से पागल हो गए तारपीड़ो —
चेहरे पर भय व हैरानी लिए खत्म हो गया भूखण्डा।
अगले ही पल तारपीड़ो के कंठ से उबलने वाली उस चीख से धरती पर जलजला आ गया —
अश्वांतक
तूताबूता से मानसिक सम्पर्क स्थापित करता चौंक पड़ा सम्राट अश्वांतक —
मुझे पुकार कर किसने तन्द्रा भंग की मेरी। तूताबूता से सम्पर्क स्थापित होने ही वाला था मेरा।
प्रलय मचने वाली थी वहां —
दुश्मन का नाश कर अश्वमणि!

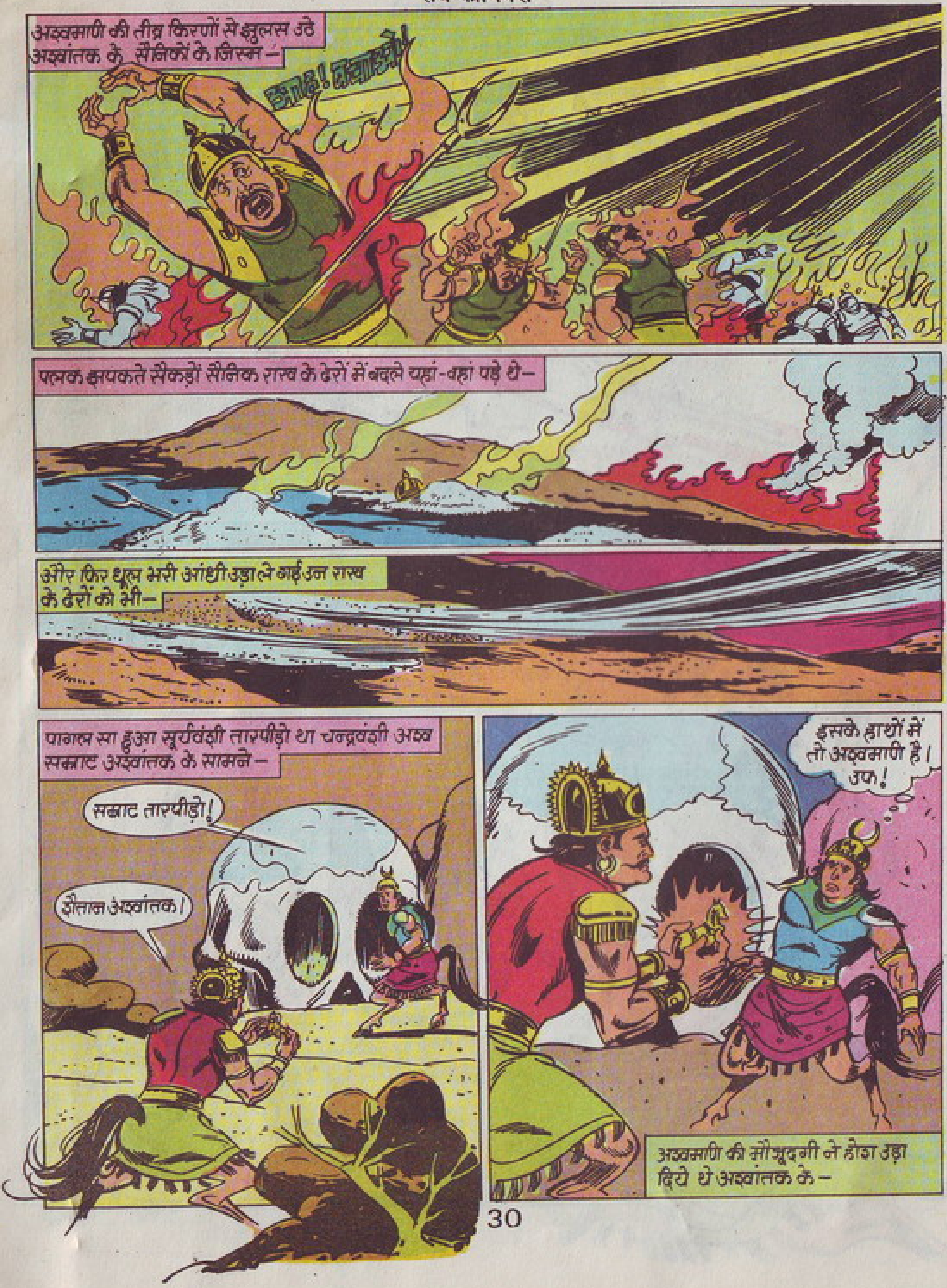

अश्वमणी की तीव्र किरणों से झुलस उठे अश्वांतक के सैनिकों के जिस्म –
आह! हायऽऽ
पलक झपकते सैकड़ों सैनिक राख के ढेरों में बदले यहां-वहां पड़े थे –
और फिर धूल भरी आंधी उड़ा ले गई उन राख के ढेरों को भी –
पागल सा हुआ सूर्यवंशी तारपीड़ो था चन्द्रवंशी अश्व सम्राट अश्वांतक के सामने –
सम्राट तारपीड़ो!
शैतान अश्वांतक!
इसके हाथों में तो अश्वमणी है। उफ!
अश्वमणी की मौजूदगी ने होश उड़ा दिये थे अश्वांतक के –

■ मौत की शतरंज बिछ चुकी है। सब अपनी-अपनी चालें चल चुके हैं।
■ अब सवाल उठता है कि कौन किसे, कहां, कब और कैसे मात देगा ?
■ क्या अश्वराज मारा गया ?
■ क्या अश्वकीर्ती कारूं के तिलिस्म से बाहर निकल पाई ?
■ तिलिस्म के खिलाड़ी तूतावूता ने जो जाल फैलाया था, क्या वह उसमें सफल हो सका ?
■ कारूं के खजाने का तिलिस्म टूट पाया या नहीं ?
■ क्या महर्षि फूकमसान अश्वराज को कारूं का खजाना लाने से रोक सके ?
■ सनसनीखेज अश्वराज सीरीज का पांचवां भाग ''फिर आया अश्वराज''
फिर आया अश्वराज